R.N.I No. 1114/2010

विशद ज्ञान ज्योति

जैन धर्म की ध्वजा पताका, लहर-लहर लहराए,
महावीर के सिद्धान्तों को घर-घर में पहुँचाए।
सदाचरण सेवा संयम अरू भक्ति सुमन महकाएँ,
'विशद ज्ञान ज्योति' के द्वारा विशद ज्ञान को पाएँ।।

प. पू. क्षमामूर्ति आचार्य 108 श्री विशदसागर महाराज

वर्ष : 5-6 अंक : 2-3 माह : नवम्बर से दिसम्बर 2017 संयुक्तांक वीर निर्वाण सम्वत् 2540 मूल्य 20/-

-: आशीर्वाद :-

प. पू. 108 आचार्य
श्री भरतसागर जी महाराज
प. पू. गणाचार्य
श्री विरागसागर जी

-: आशीष अनुकम्पा :-

प. पू. 108 आचार्य
श्री विशदसागर जी महाराज
प. पू. 108 मुनि
श्री विशालसागर जी महाराज

परामर्श मण्डल

- प्रतिष्ठाचार्य पं. विमल कुमार जैन (बनेठा वाले)
- पं. डा. सनत कुमार जी जैन
- बा. ब्र. ज्योति दीदी
- सुरेश जी सरल, जबलपुर(म.प्र.)
- पं. अरविंद शास्त्री, दिल्ली
- पं. राजेश ''राज'' भोपाल
- महेन्द्र जैन (गंगवाल) 'समाज रत्न'
- सुमेर जैन बाकलीवाल

- विमल जैन बाकलीवाल
- विनोद जैन (कोटखावदा)
- संजय जैन (काला)
- जिनेन्द्र कुमार जैन
- मनीष बैद
- बसन्त जैन
- कुमार विकास जैन (सी.ए., कोटा)
- प्रो. ललित किशोर चतुर्वेदी

विज्ञापन दर

स्ट्रिक	: 800 रू.
आधा पृष्ठ	: 2100 रू.
पूरा पृष्ठ	: 3100 रू.
एक चौथाई(रंगीन)	: 2500 रू.
आधा पृष्ठ(रंगीन)	: 3500 रू.
पूरा पृष्ठ(रंगीन)	: 5100 रू.
कवर-2और 3(रंगीन)	: 10,000 रू.
बैक कवर पृष्ठ(रंगीन)	: 11,000 रू.

-: प्रधान सम्पादक :-
ब्र.आरती दीदी
संघस्थ आ.विशद सागर जी महाराज

: परम संरक्षक एवं संरक्षक शिरोमणि के नाम एवं फोटो पत्रिका में हर बार प्रकाशित किए जायेंगे।
: पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत हो ना अनिवार्य नहीं है।
: सभी विवादों का हल जयपुर कार्यालय में होगा।

सम्पादक :
निर्मल गोधा
जैन सरोवर समिति
प्रधान कार्यालय :
2142, निर्मल निकुँज, रेडियो मार्केट,
नेहरू बाजार, मनिहारों का रास्ता
जयपुर-302003 (राज.)
Email : vishadgyanjyoti@gmail.com
Ph.: 0141-3294018, 09414812008

सहसम्पादक : **बसन्त जैन**
Mob.: 8114417253, 8561023344

• न्याय का क्षेत्र जयपुर • विशद ज्ञान ज्योति में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने है, आवश्यक नहीं कि 'विशद ज्ञान ज्योति'उनसे सहमत हो। • मुख्य कार्यालय पर आपका सदस्यता प्रापत्र एवं राशि प्राप्त होने के पश्चात आपको सदस्यता संख्या व रजि.रसीद प्रेषित की जाएगी।पत्र व्यवहार में संख्या का प्रयोग करे। • मूल्य एवं आवधिकता में परिवर्तन सभी सदस्यों पर लागू होगा।सभी • पद मनोनीत व अवैतनिक। • पत्रिका से संबंधित सभी अधिकार संपादक के पास सुरक्षित है।

धर्म स्नेही महानुभावा, जय जिनेन्द्र।

राजस्थान का हृदय स्थल एवं गुलाबी शहर (पिंक सिटी के नाम से मशहूर) जयपुर शहर जो जैन नगरी एवं जैनों की काशी कही जाती है, उसे राजस्थान की राजधानी होने का गौरव प्राप्त है। इसके लिए बड़े खेद और दु:ख की बात है कि जैन धर्म कि धरोहर जिनके चरणों की रज हम सभी श्रद्धालु शीष पर चढ़ाते हैं एवं जिनकी मन-वचन-काय त्रियोग से पूजा करते हैं ऐसे देव-शास्त्र-गुरू की आज अपने इस बुद्धिजीवी लोगों के बीच क्या स्थिति है, शायद आप परिचित है। किन्तु आज तक इसके लिए कोई कारगर कदम नहीं उठाया गया और न ही उनकी यथायोग्य ठहरने, आहारचर्या, वैयावृष्ठि इत्यादि की कोई स्थाई व्यवस्था हो रही है, जयपुर नगर का सौभाग्य है कि इसके पास अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी, पद्मपुरा, चूलगिरी होने से प.पू. आचार्यो, मुनिराजों, आर्यिकाओं का निरन्तर आगमन होता रहता है तथा इस बीच और बड़ा सौभाग्य कि 'औषधि दान महादान' के लिए भारत प्रसिद्ध वैद्यराज सुशील कुमार जी जिनकी अचूक औषधी से सभी साधु-साध्वी, त्यागी -व्रतियों को स्वास्थ्य लाभ प्राप्त होता है जो जयपुर में ही विराजते हैं।

आज से पूर्व कई मुनि महाराज अपने स्वास्थ्य लाभ हेतु यहाह्न पधारे किन्तु रहने एवं आहार इत्यादि की समुचित व्यवस्था न होने से कई स्थानों पर रूक कर अपना समय पूर्ण किया अब हम लोग मन में यह भाव उत्पन्न किये हुए हैं कि जयपुर शहर में एक त्यागी व्रती भवन का निर्वाण हो जिसमें उनकी चर्या हेतु पूर्ण व्यवस्था हो सके।

हम लोगों के मन में यह पीड़ा है कि संतों की पूर्ण की व्यवस्था हो इस व्यवस्था हेतु त्यागी व्रती भवन निर्माण की योजना बनाई। इस कार्य के लिए आप सभी का सहयोग वांछनीय है ऐसे अपूर्व धर्मकार्य में सहयोग कर धर्म लाभ लेकर अपना जीवन सफल बनाएं।

जैन सरोवर समिति, जयपुर द्वारा परम पूज्य क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशद सागर जी महाराज संसंघ के सान्निध्य में निम्न कार्य की योजना चल रही है।

- जिनमंदिर की स्थापना, यात्री भोजनशाला, छात्रावास की व्यवस्था।
- त्यागी-व्रतियों को ठहरने की समुचित व्यवस्था करना।
- त्यागी -व्रतियों के लिए औषधि व्यवस्था।
- जैन समाज के गरीब बच्चों की शिक्षा एवं स्कूल ड्रेस एवं ऊनी वस्त्र ड्रेसों की व्यवस्था।
- साहित्य संग्रह प्राचीन शास्त्रों का प्रकाशन।

विशेष : जैन मंदिर में जितना भी साहित्य हैं और जिनागम (पूजा व अन्य ग्रन्थ) है, उनकी नि:शुल्क बाईन्डिंग की व्यवस्था समिति करती है।

प्रचीन मंदिरों का जीर्णोद्धार एवं साधु-साध्वियों की शहर में दर्शन की व्यवस्था एवं आहार-विहार में सहयोग करना।

- जैन समाज के सर्वाधिक अंक प्राप्त कर 10वीं में और 12वीं में उच्च प्रतिशत लाने वाले बच्चों को प्रतिवर्ष पुरस्कार दिया जाता है। जहां भी आचार्य श्री का वर्षायोग होता है। उसमें प्रतीक चिन्ह, सर्टिफिकेट, उसमें रूकने व खाने की पूर्ण व्यवस्था नि:शुल्क है।
- जैन परिवारों की विधवा व तलाकशुदा महिलाओं को आर्थिक सहायता भी देते है।

प्रकाशन सूचना

- आप अपनी अप्रकाशित रचनाएँ शाकाहार, समन्वय, मानवता, सदाचार, एकता इत्यादि विषय पर, सी.डी./ई-मेल/फुल स्केप कागज परलेख, कविता, कहानी, चुटकुले, सुपाठ्य अक्षरों में लिखकर भेजें।
- प्राचीन तीर्थो, सिद्ध क्षेत्रों, मंदिरों, चमत्कारी स्थलों की यदि आपके पास जानकारी है तो पूर्ण विवरण मय फोटो के साथ लिख भेजें। जिससे पत्रिका में छपकर सम्पूर्ण समाज उनके बारे में जानें।
- आपके राज्य या जिले व नगर/शहर/गांव में हो रहे विविध धार्मिक आयोजनों की जानकारी हो फोटो सहित तो आप 'जैन सरोवर समिति' कार्यालय को इसकी सूचना 15 दिन पूर्व में व आयोजित कार्यक्रम सम्पन्न होने के समाचार भिजवाने की व्यवस्था करें।
- 'जैन सरोवर समिति' आपके द्वारा भेजी जाने वाली रचनाएँ, सुन्दर और स्पष्ट अक्षरों में सदस्यताशुल्क के साथ लिख कर भेजें। पत्रिका प्राप्त होते ही पत्रिका प्राप्त होने की सूचना पत्र या पोस्टकार्ड से अपना रजिस्ट्रेशन नं., नाम, पता अंकित कर अपने विचारों व सुझावों के साथ अवश्य भेजें।

सदस्यता

शिरोमणी सदस्य	-	21000/-
परम संरक्षक	-	11000/-
संरक्षक	-	5100/-
सहयोगी संरक्षक	-	3100/-
आजीवन सदस्य (10वर्ष)	-	1100/-
पाँच वर्ष	-	500/-
एक प्रति	-	20/-

सदस्यता शुल्क भेजने का पता

सुरेश जैन सेठी

शान्ति नगर, दुर्गापुरा, जयपुर

मो.9413336017

'विशद ज्ञान ज्योति' में विज्ञापन दीजिए और पाठकों तक अपनी बात पहुंचाये।

गणाचार्य श्री विरागसागर जी

क्षमा के बिना त्याग व्यर्थ

चिंतन (साधुओं की क्षमावाणी)

सम्यकदृष्टि जीव निर्ग्रन्थ की अवहेलना तो दूर उनकी बुराई भी नही सुन सकता।

मनीषियों.....

जिस प्रकार हंस मानसरोवर में लीन होता है उसे अन्य कोई स्थान नही रुचता ठीक इसी प्रकार मनुष्य रुपी हंस अगर अपनी सम्यक ज्ञान, दर्शन से परिपूर्ण आत्मा रुपी सरोवर में लीन हो जाये तो उसे नस्वर संसार रुपी अन्य स्थान नही रुचेगे।

इन्द्रिय सुख, आभास रुपी दु:ख ही है किन्तु परमार्थ सुख नही है। आचार्य श्री पूज्यपाद स्वामी ने इष्टोपदेश मे कहाँ है-

वासनामात्रमेवैतत् सुखं दु:खं च देहिनाम्।
तथाह्युद्वेजयन्त्येते, भोगा रोगा इवापदि।।6।।

भावार्थ - संसारी प्राणियों को इन्द्रिय से प्राप्त सुख-दुख कल्पना मात्र हैं, वास्तविक नहीं हैं, इसलिये यह भोग आपत्ति के समय रोगों की तरह आकुलता पैदा करते हैं।

– गणाचार्य श्री विरागसागर जी

आशीर्वाद

संस्कार का लोक में, होवे पूर्ण विकाश।
जीव सभी धर्मी बनें, करना है यह प्रयास।।

सन् 2004 में हमारा जयपुर प्रवेश हुआ तब अचानक ही घटना हुई कि श्री पुष्पदन्त जिनालय छावड़ा मंदिर में समवशरण विधान होने जा रहा था जिसमें सान्निध्य हेतु प्रवेश किया अचानक भूल से एक दिन पहले ही प्रवेश कर लिया वहाँ लोगों को कोई सूचना नही रही तो लोग परेशान हो गये प्रवेश के पूर्व श्री दि.जैन मंदिर शिवाड़ बाकलीवाल के दर्शन करने रुक गये तो वहाँ के लोगों ने उस दिन के आहार की व्यवस्था बनाई उसमें निर्मल गोधा जी अग्रसर रहे और हमारे संघ से बहुत प्रभावित हुए तब से हमेशा आना जाना चलता रहा उसी बीच कुछ समाज में होने वाली व्यवस्थाओं की चर्चा हुई तो 'जैन सरोवर समिति' का गठन हुआ जिसके द्वारा समय-समय पर समाज में होने वाली अनेक समस्याओं के लिए समीति ने श्रेष्ठ कार्य किए साथ ही 'विशद ज्ञान ज्योति' पत्रिका का भी प्रकाशन किया जो अनेक साधु संतो की विशेष जानकारी एवं उनके द्वारा दिए लेख प्रकाशित किए जाते रहते हैं जिससे समाज लाभान्वित होती है। इस बार पत्रिका के प्रकाशन मे विलम्ब होने से 'ब्र.आरती दीदी' के लिए प्रेरणा दी तो उनके द्वारा यह पत्रिका का संकलन किया गया है जो बहुत ही श्रेष्ठ और रोचक है।

आगे भी सम्पादक के साथ सहयोग करके पत्रिका का प्रकाशन करते रहें हमारा ब्र. आरती दीदी एवं जैन सरोवर समिति एवं पत्रिका प्रकाशक के लिए आशीर्वाद।

– आचार्य श्री विशदसागर जी

विशुद्ध वाणी

1. हे ज्ञानियो! समयसार को आपने पास रख लेने से समयसार के ज्ञाता नही बन जाता है कोई समयसार के सिद्धान्तों को आध्यात्म में डुबाना पड़ता है। जिस प्रकार रोटी से आटा नहीं बनता बल्कि आटे से रोटी बनती है हमेशा कच्चे माल से ही पक्का माल तैयार किया जा सकता है न की पक्के माल से कच्चे माल को उसी प्रकार हे ज्ञानियो! आप भी अपनी युवास्था में संभल जाना क्योंकि युवावस्था ही वो कच्चा माल है जिससे आप संसार में धर्म में मालामाल हो सकते है।

2. हे जीव! अरहंत का बिम्ब सोने के सिंहासन पर विराजमान हो सकता है बो बिम्ब है क्योंकि वे निर्मोही परमात्मा का बिम्ब है लेकिन दिगम्बर मुनि, आचार्य, उपाध्याय, साधु पर कभी न चंवर न छत्र न सिंहासन होता हैं ये तीनों राजा महाराजाओं की पहचान है 32 चवर चक्रवर्ती के होते है 64 चंवर तीर्थाकर के होते है और जिसके कोई चंवर नहीं होते है वे निर्ग्रन्थ होते है।

3. हे ज्ञानियो! जिस प्रकार आप बाजार में कोई सामान लेते हो तो आप उस सामान की शील देखते हो कि ये सामान सही है और अगर शील भंग है तो वो सामग्री नही लेते है, उसी प्रकार हे जीव! जिस मानव का शीलभंग हो जाता है जो अपने मार्ग से भटक जाता है उसे कोई भी पसंद नही करता उसे इस जगत में केवल तिरस्कार मिलता है कोई बांध की कीमत जब तक है जब तक उसमे पानी भरा हो फसलों को मिलता है लेकिन जैसे ही बाँध टूट जाता है तो केवल फसलों का विनाश ही करता है। इसलिए ज्ञानी सम्यकचारित्र के मार्ग पर चलो तो निश्चित ही जय जयकार होगी।

– आचार्य विशुद्धसागर जी

विमर्श उवाव

– श्रमणाचार्य विमर्शसागर जी

''मन के मालिक बनें, मन को मालिक न बनायें''

भो क्षपणों! जो योगी मन को समाहित कर लेता है वह चरित्र को दृढ़ता से पालता है। जिसका मन चंचल होता है वह चारित्र की शुद्धि को प्राप्त नहीं हो पाता। वचन और काय से समृद्ध योगी जब तक मन की स्वच्छंदता पर अंकुश नहीं लगाता तब तक वह साधना के नाम पर मात्र चलनी में पानी भरने का अप्रयोजनीय श्रम करता है। स्वच्छंद मन संस्कारहीन दुष्ट अश्व की तरह होता है, जो चलता तो बहुत है किन्तु पहुँचता कभी नहीं। मंजिल की उपलब्धि मन के मालिक स्वयं बनने से हो सकती है। अभी तो मन हमारा मालिक बन बैठा है, जो हमारी सुखमय जिंदगी को तबाह कर रहा है। हमें चाहिये कि हम मन के मालिक बनें, मन को अपना मालिक न बनायें। मन को मालिक बनाने का अर्थ है देना। मन उद्दण्ड है, मन अधम है, मन पापी है, मन धोखेबाज है। मन को वश में रखना ही मालिक बनना है। अपने आत्मगुण रूपी खजाने की चाबियाँ मन को मत सौंपना।

आत्मा में मृदुता धारण करो

लेखक – ज्ञानवारिधी आ. विशदसागर जी

हे! चैतन्य परमात्मा

तू परमात्मा है तो तेरा स्वभाव क्या है? विनय या अविनय, विनय किसकी करना है किस प्रकार से विनय करना है विनय हमेशा परम परमेष्ठी की, की जाती है श्रेष्ठ हैं और श्रेष्ठता प्रदान करने में सहकारी हैं जिनका कोई नाम नहीं जो बेनाम हैं। क्योंकि नाम तो संकीर्णता की ओर जाता है और संकीर्णता की कुलियाँ संकीर्ण राह में गुजरने वाला दूर तक नहीं देख सकता है विस्तार के लिए संकीर्णता की दीवार को तोड़ना पड़ता है।

नय यद्यपि वस्तु के एक देश को ही ग्रहण करता है किन्तु उसमें 'वि' विशेषता लगाने से वह विनयमय हो जाता है अर्थात् जो नयातीत यानी सम्पूर्णता को लिए है। जो उसीम है, उस असीम के प्रति होने वाला समर्पण ही सच्ची विनय है। असीम क्या है दर्शन, ज्ञान और चारित्र जो अपने आप में परिपूर्ण है जो हमारी विनय उस अनन्त रत्नत्रय और उसकी पूर्णता प्राप्त परमात्मा के प्रति और उसका एक देश में पालन करने वाले संतों के प्रति है उनके चरणों में समर्पण है और वास्तव में विनय तो अपने अन्तश्चेतना में व्याप्त रत्नत्रय को जागृत करने रूप चैतन्य की जागृति ही सच्ची विनय है, नम्रता है मार्दव भाव है। **''मृदुभावः भविः मार्दवः''** मृदुता का भाव मार्दव है तेरे सामने जब मृदु पदार्थ आते हैं तो मन मयूर नृत्य करने लगता है और उन्हें पाने हेतु रसना इन्द्रिय उछल कूद करने लगती है। मृदु के भोग तो चाहता है कि मृदुता के कार्य करना नहीं चाहेगा तो कैसे मृदु भोग की प्राप्ति होगी। सरिता मृदु होकर बहती है तो कठोर चट्टानों को धूलि चटा देती है और चट्टान कठोर होती है तो समुद्र के बीच दबकर अपना अस्तित्व खो बैठती है अतः अपने भाव को स्वभाव को मात्र प्रगट करना है कहीं बाहर नहीं खोजना है।

बेटी

''सजा नही सपना होती है बेटी।
गैरों के बीच एक अपना होती है बेटी।।
रंग से सजाती है घर आंगन को।
आंगन की कल्पना होती है बेटी।।
वेदना नही वरदान होती है बेटी।
भार नही जीवन का सार होती है बेटी।।
जीवन की उल्झी राहों के बीच।
एक सहज संवेदना होती है बेटी।।
आँखों में रखकर पलकों से सजाती है जीवन।
सच पूछो तो कभी सीता तो
कभी अनुसुईया होती है बेटी।
कभी लक्ष्मीवाई तो कभी दुर्गा होती है बेटी।।

संकलन – ब्र. आरती दीदी

भजन

संसार का नजारा

(तर्ज–रहा गर्दिशों में हरदम.....)

रचयिता – आ. विशदसागर जी

मिले जिन्दगी में हरदम, गुरूदेव का सहारा।
आशीष से गुरू के, मिले दर्द से किनारा।।
तुमसे चमन हैं सारे, ये चांद औ सितारे।
जाना है आज हमने, संसार का नजारा।।
मिले.....

हर इक मुसीबतों को, हँस कर सहन करेंगे।
मंजिल मिलेगी हमको, संकल्प ये हमारा।।
मिले.....

मंजिल को पाने हेतु, सद राह पर चलेंगे।
जाना है आज हमने, जब से तुम्हें पुकारा।।
मिले.....

आराध्य देव मेरे, परमात्मा हमारे।
अर्पित 'विशद' करूँ क्या, सर्वस्व है तुम्हारा।।
मिले.....

गुरुदेव मेरे सूरज हम मन्त है सिवारे।
मेरी करते गुरू विनति पाना है।
विशद मंजिल ये लक्ष्य है हमारा।।
मिले.....

तीन को याद रखें

1. तीन चीजे किसी का इन्तजार नहीं करती समय, मौत और ग्राहक
2. तीन चीजे जिन्दगी में एक बार मिलती हैं माँ, बाप और जवानी
3. तीन चीजे परदे के योग्य है धन, स्त्री और भोजन
4. तीन चीजों से बचने का प्रयास करना चाहिए बुरी संगत, स्वार्थ और निन्दा
5. तीन चीजों में मन लगाने से उन्नति होती है ईश्वर, मेहनत और विद्या
6. तीन चीजें निकलने पर वापिस प्राप्त नहीं होती तीर कमान से, बात जवान से और प्राण शरीर से
7. तीन चीजें कभी नहीं भूलना चाहिए कर्ज, फर्ज और मर्ज
8. तीन चीजों का सम्मान करें माता, पिता और गुरु
9. इन तीन को हमशा वश में रखें मन, काम और लोभ
10. इन तीन पर दया करें बालक, भूखे और पागल

– ब्र. प्रदीप भैया

विवेक वाणी

– आ. विवेकसागर जी

जिस प्रकार ग्रीष्म ऋतु में लोग दिन में तरुओं की छाया का आश्रय लेतें हैं, शीतल जल वाले सरोवरों में डूबे रहकर ताप का निवारण करते हैं, शीतल पेय पीते है, और रात्रि में खुले आकाश के नीचे चन्द्रमा की शीतल किरणों से शान्ति प्राप्त करते हैं उसी प्रकार जिनेन्द्र रुपी कल्पतरू के पाद कमलों में संसार के जन्म-जरा-मरण रूप तापत्रय से मुक्ति प्राप्त करने के लिए अवश्य जाना चाहिए।

''जो मनुष्य अरहंतों की पूजा करता है स्वर्ग के देव उसकी पूजा करते हैं।।''

आत्म दर्शन

– मुरसलगंज गौरव
आ. सौभाग्यसागर जी

बर्तन पर कलई कराना हो तो पहले बर्तन को साफ कर उसकी चिकनाई दूर की जाती है, तभी उस पर चमक आती है। दीवार भी साफ करेगें, तभी रंग-रोगन उस पर चमक पैदा कर सकता है। इस तरह हृदय को भी साफ बनायेंगे, तो उसमें आत्मा का प्रकाश प्रकट हो सकेगा। जब तक राग-द्वेष का मैल रहता है, तब तक आत्मा में प्रकाश प्रकट नहीं हो सकता है। अत: ज्ञानी जीव पहले कसन, पाप रूप कपड़े को साफ करके ही आत्मशौधन कर विशद ज्ञान का प्रकाश करते हैं।

विशोक वाणी

– मुनि श्री विशोकसागर जी

ताला चाबी को एक ओर घुमाने से बंद होता है, वहीं दूसरी ओर घुमाने से खुलता है। हम अपने विचार, वाणी और व्यवहार को इस तरह घुमायें की रिश्तों के बन्द पड़े ताले फिर से खुल जाएँ.....

कड़वे प्रवचन

– मुनि श्री तरूणसागर जी

जीवन में सफल होना है तो चार वाक्यों को कचरे के डिब्बे में डाल दो।
एक: लोग क्या कहेंगे?
दो: मुझसे नहीं होगा।
तीन: अभी मेरा मूड नहीं
चार: मेरी तो किस्मत ही खराब है

ये वह चार वाक्य है जो आदमी को आगे नहीं बढ़ने देते। चलो,उठो,आगे बढ़ो।क्यों सुस्त पड़े हो। जो पाना है,उसे पाने के लिए पुरी ताकत झोंक दो तुम्हे आगे बढ़ने से कोई नहीं रोक सकता।

पहेलियाँ

यह हमको देती आराम,
यह ऊँची तो ऊँचा नाम,
बड़े-बड़े लोगो को देखा,
इसके लिये होता संग्राम।

❋ ❋ ❋

सीस कटे तो दल बने,
पैर हटाये बाद
पेट निकाले बाल है।
करो, शब्द यह याद।

❋ ❋ ❋

यदि मुझको उल्टा कर देखो
लगता हूँ मैं नव जवान।
कोई प्रथक नहीं रहता
बूढ़ बच्चा या जवान।

❋ ❋ ❋

आदि कटे तो गीत सुनाऊँ,
मध्य काटकर संत बनाऊँ,
अन्त कटे साथी बन जाता,
सम्पूर्ण सबके मन भाता।

❋ ❋ ❋

मैं अलबेला कारीगर
काटूं काली घास,
राजा, रंक और सिपाही,
सिर झुकाते मेरे पास।

❋ ❋ ❋

उत्तर :
कुर्सी, बादल, वायु, संगीत, नाई।

श्रीमति ऊषा, नारनौल

हास्य तरंग

1. पति-तेरे बाप की जले पे नमक छिड़कने की आदत गयी नहीं।
पत्नी-क्यों क्या हुआ ?
पति-आज फिर से पूछ रहा था कि मेरी बेटी से शादी करके खुश तो हो ना ?

2. अध्यापक ने सभी बच्चों से क्रिकेट मैच पर निबंध लिखने को कहा।
सभी छात्र अपनी-अपनी कापी लेकर निबंध लिखने में जुट गए। मगर ?
एक लड़का चुपचाप बैठा था।
अध्यापक ने उसकी कापी देखी तो उस पर सिर्फ एक लाइन लिखी थी- 'कोहरे की वजह से मैच स्थगित कर दिया गया है।'

3. एक दिन पड़ोस का हरियाणवी छोरा आ के बोल्या ''रे चाचा, अपनी इस्त्री दे दे...''
चचा ने अपनी जनानी की ओर इसारा करया और बोला-''ले जा, वा बैठी....''
छोरा चुप चाप देखने लाग्या......
बोला- ''चाचा यो नहीं, कपडे वाली''...
चाचा बोल्या- ''भले मानस, यो तन्ने बगेर कपड़े दिखे है के ???''
छोरा गुस्से में चीखा- ''रा चाचा बावला ना बन, करंट वाली इस्त्री ''......
चाचा- ''बावले, हाथ ते लगा के देख....... जे ना मारे करंट, फेर कहिये....''

4. बहु की विदाई के बाद घर आने पर सास ने कहा, ''बेटी आज से मुझे माँ और अपने ससुर को पापा कहना''।
शाम को पति के घर आने पर पत्नी बोली
''माँ भैया आ गये।''

5. रात के 2 बजे पत्नी का मोबाईल बजा।
पति चौंक कर उठा, तो देखा मोबाईल पर एक मैसेज था। ''ब्युटीफुल''
पति ने तुरंत अपनी पत्नी को उठाया और गुस्से से पूछा-यह क्या है ?
तुम्हे ब्यूटीफुल का मैसेज किसने भेजा है ?
पत्नी भी चकरा गई कि अब 50 की उम्र मे उसे ब्यूटीफुल कोन कहेगा भला।
जब उसने मोबाईल हाथ मे लिया तो झल्लाकर पति से बोली - चश्मा लगाकर मोबाईल उठाया बोली... ''ब्यूटीफुल'' नही ''बैटरीफुल'' लिखा है।

श्रीमति एकता, रेवाड़ी

आगामी 24 तीर्थंकरों

संघस्थ - आर्यिका भक्तिभारती माता जी

आगामी 24 तीर्थंकरों कौन-सा जीव-कहाँ नरक के नाम है अब जिस भव में तीर्थंकर प्रकृति का बंध

1.	श्री श्रीभपट्टाषजी/महापद्य	राजा श्रेणिक	1 नरक	श्रेणिक
2.	श्री सुरदेव जी	द्विपृष्ट नारायण	6 नरक	सुपार्श्व
3.	श्री सुपार्श्व जी	स्वयंभू नारायण	6 नरक	उदंक
4.	श्री स्वयंप्रभ जी	पुरुषोत्तम नारायण	6 नरक	प्रोष्ठिल
5.	श्री सर्वात्मभूत जी	पुरुषोत्तम नारायण	6 नरक	कृतसूर्य (कटप्रु)
6.	श्री देवसुत जी	पुण्डरीक नारायण	6 नरक	क्षत्रिय
7.	श्री कुलसुत जी (प्रभोदया)	दत्त देव नारायण	5 नरक	पाविल (श्रेष्ठी)
8.	श्री उदंक जी	अपूर्व ग्रीव प्रतिनारायण	7 नरक	शंख
9.	श्री प्रोष्ठिल जी (प्रश्नकीर्ति)	तारक प्रतिनारायण	6 नरक	नन्द (नन्दन)
10.	श्री जयकीर्ति जी	मेरक प्रतिनारायण	6 नरक	सुनन्द
11.	श्री मुनिसुव्रत जी	निसमुम्भ प्रतिनारायण	6 नरक	शशांक
12.	श्री अर (अभय) जी	मधु कैटव प्रतिनारायण	6 नरक	सेवक
13.	श्री अपाप जी (पुण्यमूर्ति)	प्रहरण प्रतिनारायण	5 नरक	प्रेमक
14.	श्री निष्कषाय जी	बलि प्रतिनारायण	6 नरक	अतोरण
15.	श्री विपुल जी	रावण प्रतिनारायण	4 नरक	रेवत
16.	श्री निर्मल जी	कृष्ण नारायण	3 नरक	कृष्ण
17.	श्री चित्रगुप्त जी	जरासिंधु प्रतिनारायण	3 नरक	सीरी (बलराम)
18.	श्री समाधि गुप्त जी	मधवा चक्रवर्ती	3 स्वर्ग	भगलि
19.	श्री स्वयंभू जी	सनत्कुमार चक्रवती	3 स्वर्ग	विगलि (वागलि)
20.	श्री अनिवृष्ठिाक जी	सुभोम चक्रवती	7 नरक	द्वीपायन
21.	श्री जय जी	ब्रह्मदष्ठा चक्रवती	7 नरक	माणवक (कनकपाद)
22.	श्री विमल जी	बलभद्र देव	5 स्वर्ग	नारक
23.	श्री देवपाल जी (दिव्यपाद)	समंतभद्र आचाय	1 स्वर्ग	सुरुपदत्त (चारूपाद)
24.	श्री अनंतवीर्याश्चेति जी	सात्यकीपुत्र 11 वां रुद्र	3 नरक	सात्यकिपुत्रजे

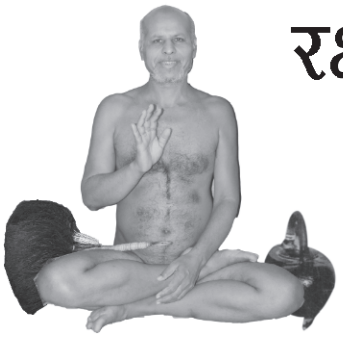

रक्षाबन्धन (वात्सल्य का पर्व)

– साहित्यरत्नाकर आचार्य श्री विशदसागर जी

रक्षाबन्धन का पर्व सन्तों के ऊपर वात्सल्य भाव का पर्व है। 'आज का यह पर्व मुक्ति पर्व है, हरीतिमा का पर्व है, धर्मरक्षा का पर्व है, खुशहाली का पर्व है, भाईचारे का पर्व है, सौहार्द्र का पर्व है, मानमर्दन का पर्व है, रक्षा की शिक्षा का पर्व है, प्रकाश का प्रेरक पर्व है। जोड़ने वाला पर्व है, वात्सल्य, स्नेह, प्रेम का पर्व है।

इस पर्व का प्रांरभ भगवान वासुपूज्य के समय से हुआ। संसार के अन्दर उतार-चढ़ाव होते हैं। विष्णुकुमार मुनि का नाम सभी जानते हैं। आपने कई बार कथा पढ़ी होगी। उज्जैन नगर में श्रीवर्मा नामक राजा राज्य करता था। उसके चार मंत्री बलि, प्रहलाद, नमुचि, बृहस्पति थे। चारों मंत्री राजा के नजदीकी थे, मंत्री बहुत विद्वान् थे। किन्तु सबसे बड़ी कमी थी कि वह जिनधर्म से हीन थे और अहंकारी थे।

अकंपनाचार्य 700 मुनियों सहित उज्जैनी नगर में पधारे। अकंपनाचार्य मुनिराज निमिष्ठा ज्ञानी थे। उन्होंने किसी निमिष्ठा को देखकर अपने ज्ञान से जान लिया कि कुछ अशुभ होने वाला है। इसलिए अकंपनाचार्य ने समस्त संघ को आदेश दिया कि राजादिक के आने पर किसी के साथ वार्तालाप न किया जावे अन्यथा अनर्थ हो जाएगा। समस्त संघ का विनाश हो जाएगा और सभी को मौन रहने का आदेश दिया। श्रुतसागर मुनि लघुशंका की बाधा आने से बाहर गये थे। श्रुतसागर मुनि आदेश नहीं सुन पाए थे। राजा श्रीवर्मा ने जाकर देखा, पूरा का पूरा संघ मौन है, नमोस्तु किया, आशीर्वाद भी नहीं मिला। राजा ने आचार्य श्री को नमोस्तु किया और कुछ प्रश्न किये किन्तु आचार्य श्री भी मौन रहे। मंत्री मिथ्यादृष्टि थे। राजाज्ञा से दर्शनार्थ आये थे। मंत्री दुष्ट भाव से कहने लगे- राजन्, इन मुनियों को कुछ ज्ञान नहीं है। इसलिए ये मौन रहने का ढोंग कर रहे हैं। क्योंकि 'मौनं मूर्खस्य लक्षणम्' मौन रहना मूर्खो का लक्षण है। जो मूर्ख अज्ञानी होते हैं, ज्ञान न होने से मौन रहते हैं। मंत्री ने कहा-राजन्! आपके जैसे महान् महापुरुष के आने पर भी आशीष नहीं दिया, ये आपका बड़ा अपमान है।

सांसारिक कार्यो में कर्म बँधते हैं, उन्हें धर्मस्थल पर धो लेते हैं। किन्तु धर्मस्थल पर बंधे कर्म कहाँ धुलेंगे? साधु के ऊपर तलवार जो पहले उठायेगा उसे कर्म का बंध होगा। क्रोध और मान धक्का लगा रहा है। किन्तु उनके हाथ पीछे हट रहे हैं। चारों ने सलाह की और एक साथ तलवार चलाई। उसी समय उस स्थान के रक्षकदेव का आसन कम्पायमान हुआ। उसने उन सबको उसी अवस्था में कीलित कर दिया। जब-जब किसी संत और भगवन्त पर उपसर्ग होता है तो अवश्य ही कोई भक्त आकर उपसर्ग दूर कर दुष्टों को दण्ड देते हैं। प्रात: काल सब लोगों ने उन मंत्रियों को उसी प्रकार कीलित तथा श्रुतसागर मुनि को ध्यानावस्था में अवस्थित देखा। मंत्रियों की कुचेष्टा से राजा बहुत क्रुद्ध हुआ। परन्तु ये मंत्री वंश परम्परा से चले आ रहे हैं। यह विचारकर उन्हें मृत्यु दण्ड तो नहीं सिर्फ गर्दभारोहण कर मुँह काला करके देश से निकाल दिया।

तदन्तर कुरुजागंल देश के हस्तिनापुर नगर में राजा महापद्म राज्य करते थे। उसकी रानी का नाम लक्ष्मीमति था। उनके दो पुत्र थे-पद्म और विष्णु। एक समय राजा महापद्म, पद्मनामक पुत्र को राज्य देकर विष्णु नामक पुत्र के साथ श्रुतसागर चन्द्र नामक आचार्य के पास मुनि हो गये। वे बलि आदिक मंत्री यहाँ आकर पद्मराजा के मंत्री बन गये। उसी समय कुमपुर के दुर्ग में राजा सिंहबल रहता था। राजा पद्म उसे पकड़ने की चिंता में दुर्बल होता जा रहा था। उसे दुर्बल देखकर एक दिन बलि ने कहा कि 'हे देव! दुर्बलता का क्या कारण है?' राजा ने उसे दुर्बलता का कारण बताया कि राजा सिंहबल हमारे राज्य पर आक्रमण करता है, हम उसे जीवित नहीं पकड़ पा रहे हैं। यह बात सुनकर तथा आज्ञा प्राप्तकर के आदि मंत्री वहाँ गये और अपनी बुद्धि के माहात्म्य से दुर्ग को तोड़कर राजा सिंहबल को बन्दी

बनाकर वापस आ गये और उन्होंने सिंहबल राजा पद्म को सौंप दिया। राजा पद्म ने खुश होकर मंत्रियों से कहा- 'तुम अपना वाँछित वर माँगो, जो माँगोगे तुम्हें दिया जाएगा। 'किन्तु मंत्री बहुत चतुर थे। बलि ने कहा-जब आवश्यकता पड़ेगी तब हम वर माँग लेंगे।

राजा ने मंत्रियों से कहा-बोलो,क्या चाहते हो ?दुष्ट मंत्री ने कहा-हम सात दिन का राज्य चाहते हैं। तदन्तर राजा पद्म सात दिन का राज्य देकर अन्त:पुर में चला गया। इधर मंत्री ने आतापगिर पर कायोत्सर्ग से खड़े हुए मुनियों को बाड़ी से वेष्टित कर यज्ञ करना शुरू कर दिया। उस यज्ञ में जूठे सकोरे, कचरा, माँस, बकरा आदि पशुओं का कलेवर तथा धूप आदि के द्वारा मुनियों को मारने के लिए बहुत भारी उपसर्ग किया। मुनि सन्यास लेकर नियम सल्लेखना में स्थिर हो गये।

प्यारे बन्धुओ! मुनियों के ऊपर उपसर्ग हो रहा है, किन्तु राजा को कोई खबर नहीं। मिथिलागिरी में आधी रात के समय बाहर निकले हुए श्रुतसागर चन्द्र आचार्य ने आकाश में काँपते हुए श्रावण नक्षत्र को देखा तो मुँह से निकला- 'ओह! महामुनियों पर उपसर्ग हो रहा है।' यद्यपि साधुजन रात्रि में मौन रहते हैं (किन्तु इस स्थिति को देखकर बोल पड़े। पास ही बैठे पुष्पधर नामक विद्याधर क्षुल्लक ने पूछा कि कहाँ, किस पर घोर उपर्सग हो रहा है? उन्होंने कहा कि 'हस्तिनापुर में अकंपनाचार्य आदि सात सौ मुनियों पर उपर्सग हो रहा है।' यह उपसर्ग कैसे दूर हो सकता है? क्षुल्लक द्वारा पूछे जाने पर कहा कि 'धरणिभूषण पर्वत पर विक्रिया ऋद्धि के धारक विष्णुकुमार मुनि स्थित हैं, वे उपसर्ग दूर कर सकते हैं। 'उनको तपस्या के प्रभाव से विक्रिया ऋद्धि प्राप्त हुई है, किन्तु उन्हें इस बात का ज्ञान नहीं है। ऐसा सुनकर क्षुल्लक उनके पास गये और सब समाचार कह सुनाया। उन्होंने अपना हाथ फैलाकर देखा तो हाथ सुमेरु पर्वत तक पहुँच गया। तब ज्ञात हुआ कि ऋद्धि प्राप्त हो चुकी है। प्यारे बन्धु! इससे साधुओं की निष्पृहता ज्ञात होती है।

छह दिन तक क्रम-क्रम से यज्ञ होता रहा। साधुओं पर उपसर्ग हो रहा है। राजा वचनबद्ध था, क्योंकि सात दिन का राज्य और साथ में अभयदान भी दिया था। विक्रिया का निर्णय कर मुनि विष्णुकुमार ने हस्तिनापुर जाकर राजा पद्म ने लज्जित होकर कहा- 'क्या करूँ मैंने पहले इन्हें वरदान दे दिया था।'

पश्चात् विष्णुकुमार मुनि बटुक का भेष बनाकर यज्ञस्थल में आये और उत्तम शब्दों द्वारा वेद पाठ शुरु कर दिया। पश्चात् 'भिक्षाम् देहि-2' की आवाज लगाई। बौने ब्राह्मण ने कहा- हमें ज्यादा नहीं बस तीन पग भूमि दे दो। मंत्री ने कहा- ब्राह्मण तुम मकान माँग लो, वस्त्र आदि माँग लो। तीन पग भूमि में तो तुम ठीक से बैठ भी नहीं पाओगे। तब बटुक ब्राह्मण ने कहा- देते हो कि नहीं अन्यथा मैं चला। तब मंत्री ने कहा- अच्छा तुम्हें तीन पग भूमि देता हूँ। ब्राह्मण ने कहा- राजा हमको विश्वास नहीं है कि तुम वचन का पालन करोगे। सिर पर कलश लेकर अग्नि की साक्षी में प्रतिज्ञा करो कि तीन पग भूमि मुझे दोगे। राजा ने प्रतिज्ञा की, हम वचन का पालन करेंगे। तब बटुक ने अपनी विक्रिया फैलाना प्रारम्भ की एक पैर सुमेरु पर्वत पर रखा और दूसरा पैर मानुषोत्तर पर्वत पर रखा, किन्तु तीसरा पैर कहाँ रखा जाए पूँछने पर लज्जित मंत्री चरणों में झुक जाते हैं। अब तीसरा कदम मेरी पीठ पर रख दीजिए भगवन्! मंत्रियों ने ऐसा कहा। प्यारे बन्धुओ! विष्णुकुमार मुनि के अन्दर कितना वात्सल्य था कि साधु और धर्म के प्रति अपनी जीवन भर की साधना को दाव पर लगा दिया। उस समय धर्म की रक्षा की थी, किन्तु वर्तमान में कतिपय साधुओं के द्वारा ऐसा उपदेश दिया जाता है कि नगर में साधु आये, पहले उसकी परीक्षा करो, उसे खोजो फिर आहार दो। क्या विष्णुकुमार मुनि ने भी उसकी परीक्षा की, बाद में उपसर्ग टाला था? नहीं न। मुनिराज ने पीठ पर पैर नहीं रखा जो चरणों में झुक गया, उसे गले से लगा लिया था, उसे आशीर्वाद दिया। मंत्री के जीवन में अमूल्य परिवर्तन हुआ। वे चारों मंत्री जैनधर्म के अनुयायी हो गये।

मुनिराज विष्णुकुमार ने वात्सल्य का परिचय दिया। सात दिन के बाद आज का दिन रक्षाबंधन का दिन बन गया था। हे भव्य आत्माओ! कषायरूपी शत्रुओं पर तुम्हें विजय प्राप्त करना है। तभी तुम्हारा रक्षाबंधन मनाना सार्थक होगा।आचार्य संघ सहित सात सौ मुनि उपसर्ग दूर होने पर शरीर से शिथिल हो चुके थे। लोगों के आग्रह पर आहारचर्या पर निकलते हैं। जिनके घर पर आहार हुए वे श्रावक धन्य हैं। बाकी श्रावक क्या करें तो उन्होंने एक-दूसरे को अपने घर में आहार कराया और आपस में रक्षासूत्र बाँधा था और ये संकल्प किया था कि धर्म की रक्षा के लिए आगे आएँगे।

राष्ट्रीय रजत आचार्य पदारोहण
दिवस समारोह के शुभ अवसर पर
दिल्ली के इतिहास में प्रथम बार
लाल किले की ऐतिहासिक धरा पर
महा संघाधिनायक, बुन्देलखण्ड के आदर्श रत्न,
अध्यात्म सूरी प.पू.राष्ट्रसंत गणाचार्य 108
श्री विरागसागर जी महा मुनिराज के करकमलों से
25 भव्य जैनेश्वरी दीक्षा
Live
परिस
दोपहर 12.30 बजे से
गुरुवार 2 नवम्बर को दोपहर 12.30 बजे से
आयोजकः प्राचीन श्री अग्रवाल दिगम्बर जैन पंचायत (रजि.), धर्मपुरा, दिल्ली-6
मुख्य संयोजक
चक्रेश जैन
मंत्री
जे.के.जैन
मैनेजर
पुनीत जैन
मैनेजर सम्पर्क सूत्रः 9899211234
संघस्थ संपर्क सूत्र : 9560602651
रविवार 22 अक्टूबर 2017
समय - दोपहर 1.00 बजे से
भव्य पिच्छिका परिवर्तन
कवि नगर
गाजियाबाद
28 से 30 अक्टूबर 2017
समय - प्रातः 6.00 बजे से
2500 इन्द्र - इन्द्राणियों द्वारा
श्रीमद् जिनेन्द्र महाअर्चना
यमुना विहार
दिल्ली-53
गुरुवार
2 नवम्बर 2017
गणाचार्य श्री 108 विराग सागर जी मुनिराज के
25 वें राष्ट्रीय रजत आचार्य पदारोहण दिवस पर
भारत सरकार द्वारा
डाक टिकट जारी
-: सौजन्यकर्ता :-
भारतीय जैन मिलन
क्षेत्र सं.16, दिल्ली

कलयुग में क्या होगा?

संकलन – क्षु. वात्सल्यभारती माता जी

श्री कृष्ण पाण्डवों से कहते हैं– ''तुम पाँचों भाई वन में जाओं और जो कुछ भी दिखे वह आकर मुझे बताओ। मैं तुम्हें उसका प्रभाव बताऊँगा।''

पाँचों भाई वन में गये। युधिष्ठिर महाराज ने देखा कि किसी हाथी की दो सूँड हैं दोनों से गन्ने खा रहा है। यह देखकर आश्चर्य का पार न रहा।

अर्जुन दूसरी दिशा में गये। वहाँ उन्होंने देखा कि कोई पक्षी है, उसके पंखों पर वेद की रिचाएँ लिखी हुई हैं पर वह पक्षी मुर्दे का मांस खा रहा है यह भी आश्चर्य है!

भीम ने तीसरा आश्चर्य देखा कि गाय ने बछड़े को जन्म दिया है और बछढ़े को इतना चाट रही है कि बछड़ा लहुलुहान हो जाता है।

सहदेव ने चौथा आश्चर्य देखा कि छः सात कुएँ हैं और आसपास के कुओं में पानी है किन्तु बीच का कुआँ खाली है। बीच का कुआँ गहरा है फिर भी पानी नहीं है।

पाँचवे भाई नकुल ने भी एक अदभुत आश्चर्य देखा कि एक पहाड़ के ऊपर से एक बड़ी शिला लुढ़कती–लुढ़कती आती और कितने ही वृक्षों से टकराई पर उन वृक्षों के तने उसे रोक न सके। कितनी ही अन्य शिलाओं के साथ टकराई। पर वह रुक न सकीं। अंत में एक अत्यंत छोटे पौधे का स्पर्श होते ही वह स्थिर हो गई।

पाँचों भाईयों के आश्चर्ये का कोई पार नहीं! शाम को वे श्री कृष्ण के पास गये और अपने अलग–अलग दृश्यों का वर्णन किया।

युधिष्ठिर कहते हैं– ''मैंने दो सूँडवाला हाथी देखा तो मेरे आश्चर्य का कोई पार न रहा।''

तब श्री कृष्ण कहते हैं– कलियुग में ऐसे लोगों का राज्य होगा जो दोनों ओर से शोषण करेंगे। बोलेंगे कुछ और करेंगे कुछ। ऐसे लोगों का राज्य होगा। इससे तुम पहले राज्य कर लो।

अर्जुन ने आश्चर्य देखा कि पक्षी के पंखों पर वेद की रिचाएँ लिखी हुई हैं और पक्षी मुर्दे का मांस खा रहा है। इसी प्रकार कलियुग में ऐसे लोग रहेंगे जो बड़े–बड़े पंडित और विद्वान कहलायेंगे किन्तु वे यही देखते रहेंगे कि कौन–सा मनुष्य मरे और हमारे नाम से संपष्ठिा कर जाये। ''संस्था'' के व्यक्ति विचारेंगे कि कौन सा मनुष्य मरे और संस्था हमारे नाम से हो जाये।

हर जाति धर्म के प्रमुख पद पर बैठे विचार करेंगे कि कब किसका श्राद्ध है ?

चाहे कितने भी बड़े लोग होंगे किन्तु उनकी दृष्टि तो धन के ऊपर (मांस के ऊपर) ही रहेगी। परधन परमन हरन ऐसे लोगों की बहुतायत होगी, कोई–कोई विरला ही संत पुरूष होगा।

भीम ने तीसरा आश्चर्य देखा कि गाय अपने बछड़े को इतना चाटती है कि बछड़ा लहुलुहान हो जाता है। कलियुग का आदमी शिशुपाल हो जायेगा। बालकों के लिए इतनी ममता करेगा कि उन्हें अपने विकास का अवसर ही नहीं मिलेगा। ''किसी का बेटा घर छोड़कर साधु बनेगा तो हजारों व्यक्ति दर्शन करेंगे.....

किन्तु यदि अपना बेटा साधु बनता होगा तो रोयेंगे कि मेरे बेटे का क्या होगा ?'' इतनी सारी ममता होगी कि उसे मोहमाया और परिवार में ही बाँधकर रखेंगे और

उसका जीवन वहीं खत्म हो जाएगा। अंत में विचारा अनाथ होकर मरेगा।

वास्तव में लड़के तुम्हारे नहीं हैं, वे तो बहुओं की अमानत हैं, लड़कियाँ जमाइयों की अमानत हैं और तुम्हारा यह शरीर मृत्यु की अमानत है। तुम्हारी आत्मा-परमात्मा की अमानत है। तुम अपने शास्वत संबंध को जान लो बस!

सहदेव ने चौथा आश्चर्य यह देखा कि पाँच सात भरे कुएँ के बीच का कुआँ एक दम खाली!

कलियुग में धनाढ्य लोग लड़के-लड़की के विवाह में, मकान के उत्सव में, छोटे-बड़े उत्सवों में तो लाखों रूपये खर्च कर देंगे परन्तु पड़ोस में ही यदि कोई भूखा प्यासा होगा तो यह नहीं देखेंगे कि उसका पेट भरा है या नहीं।

दूसरी और मौज-मौन में शराब, कबाब, फैशन और व्यसन में पैसे उड़ा देंगे। किन्तु किसी के दो आँसू पोंछने में उनकी रूचि न होगी और जिनकी रूचि होगी उन पर कलियुग का प्रभाव नहीं होगा, उन पर भगवान का प्रभाव होगा।

पाँचवा आश्चर्य यह था कि एक बड़ी चट्टान पहाड़ पर से लुढ़की, वृक्षों के तने और चट्टाने उसे रोक न पाये किन्तु एक छोटे से पौधे से टकराते ही वह चट्टान रूक गई।

कलियुग में मानव का मन नीचे गिरेगा, उसका जीवन पतित होगा। यह पतित जीवन धन की शिलाओं से नहीं रूकेगा न ही सत्ता के वृक्षों से रूकेगा। किन्तु प्रभुनाम के एक छोटे से पौधे से, प्रभु भजन से एक छोटे से पौधे मनुष्य जीवन का पतन होना रूक जायेगा।

संकलन – क्षु. वात्सल्यभारती माता जी

आप चाहते हो तो

संघस्थ – ब्र. सोनू दीदी

जीतना चाहते हो तो-तृष्णा को जीतो।

खाना चाहते हो तो-गम खाओ।

पीना चाहते हो तो-सत्य प्रेम का रस पिओ।

देना चाहते हो तो-देश धर्म पर अपना बलिदान दो।

छोड़ना चाहते हो तो-बुराई तथा अत्याचार को छोड़ो।

बोलना चाहते हो तो-सत्य एवं मीठे वचन बोलो।

तौलना चाहते हो तो-अपनी शक्ति तोलो।

सुनना चाहते हो तो-भगवान की प्रशंसा व दुनिया की बातें सुनो।

करना चाहते हो तो-कर्त्तव्य का पालन करो।

हँसना चाहते हो तो-अपनी मूर्खता तथा स्वार्थ पर हँसो।

सीखना चाहते हो तो-दूसरों की भलाई करना सीखो।

मारना चाहते हो तो-बुरी इच्छाओं को मारो।

लेना चाहते हो तो-आशीर्वाद लो।

बढ़ना चाहते हो तो-सत्यमार्ग पर बढ़ो।

तेइसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ जी

(चिन्ह – सर्प)

कुल भव - 10

नाम - 1. जम्बूद्वीप के दक्षिण भरत क्षेत्र के सुरम्य देश की पोदनपुर नगर के राजा अरविन्द का मंत्री विश्वभूति शास्त्र का जानकार ब्राह्मण व अनुन्धरी ब्राह्मणी का छोटा पुत्र मरुभूति 2. मलय देश के कुब्जक नामक साल्लकी वन में ब्रजघोष हाथी 3. सहस्त्रार स्वर्ग में देव 4.जम्बूद्वीप के पूर्व विदेह क्षेत्र के पुष्कलावती नगरी के विजयार्ध देश के त्रिलोकोत्तम नगर के राजा विद्युतगति रानी बिंधनमाला का रश्मिवेग पुत्र जो मुनि हुए 5. अच्युत स्वर्ग के पुष्कर विमान में देव 6. जम्बूद्वीप के पश्चिम विदेह क्षेत्र में पद्मनामक देश की अश्वपुर नगर के राजा वज्रवीर्य व रानी विजय का वज्रनाभि पुत्र 7. सुभद्र नामक मध्यम ग्रैवयेक के मध्य विमान में अहमिन्द्र 8. जम्बूद्वीप के कौशल देश की अयोध्या नगरी के राजा ब्रजबाहु और रानी प्रभंकरी के आनंद नाम का पुत्र फिर मुनि 9. अच्युत स्वर्ग के प्राणांत विमान में इन्द्र 10. राजा अश्वसेन व रानी वामादेवी के पुत्र तेइसवें तीर्थंकर 'पार्श्वनाथ' जी।

मुख्य संक्षिप्त वर्णन

जन्म काल	–	चौथा काल
पिता	–	महाराज अश्वसेन
माता	–	महारानी वामादेवी
वंश	–	उग्रवंश
जन्म तिथि	–	पौष कृष्ण ग्यारस
जन्म राशि	–	कुम्भ
जन्म राशि स्वामी	–	शनि
जन्म नक्षत्र	–	विशाखा
गर्भावास काल	–	8 माह 7 दिन
जन्म स्थान द्वीप	–	जम्बूद्वीप
जन्म स्थान क्षेत्र	–	भरत क्षेत्र
जन्म स्थान नगरी	–	बनारस-काशी
देह वर्ण	–	हरे रंग
शरीर की ऊँचाई	–	9 हाथ
कहाँ से अवतीर्ण हुये	–	प्राणत स्वर्ग से
विवाह	–	नहीं बालयति
कुमार काल	–	30 वर्ष
राज्य काल	–	नहीं किया
जन्म योग	–	अनिल
दिगम्बर स्वरूप काल	–	70वर्ष
छद्मस्थ काल	–	4माह
केवलज्ञान काल	–	69 वर्ष 8 माह
आयु	–	100वर्ष
प्रथम आहार	–	चौथे दिन
प्रथम आहार दाता	–	धनदष्ठा राजा
आहार द्रव्य	–	खीरान्न
आहार स्थान	–	गुलमखेट द्वारावती
प्रथम आहार पर रत्नवृष्टि	–	एक बार 12 1/2 करोड़
समवशरण प्रमाण	–	1 1/4 योजन
गंध कुटी	–	50 धनुष
प्रथम समवशरण स्थान	–	अहिच्क्षेत्र-देवदारू वृक्ष
मुख्य गणधर	–	श्री स्वयंभू
मुख्य आर्यिका	–	सुलोचना
प्रथम श्रोता	–	महासेन (अजितसेन)
उपसर्ग	–	संवर देवकृत (कमठ का जीव)
योग निरोध काल	–	1 माह
मोक्ष तिथि	–	श्रावण शुक्ला सप्तमी
मोक्ष समय	–	सांय
मोक्ष स्थान	–	श्री सम्मेद शिखर जी-स्वर्णभद्र कुट
मोक्ष आसन	–	कायोत्सर्ग

तीर्थंकर प्रकृति का बंध किस भव में – आनन्द महामण्डलेश्वर राजा।

गर्भ पूर्व 6 माह से जन्म समय तक रत्नवृष्टि – एक दिन में तीन बार–एक बार में 3 1/2 करोड़, 15 माह में 1371 बार में 47 अरब 98 करोड़ 50 लाख रत्न।

घटनाऐं शासनकाल – केवलज्ञान से पहले भगवान पार्श्वनाथ पर घोर उपसर्ग। भगवान पार्श्वनाथ के धर्म तीर्थ में चतुर्विध संघ को श्री सम्मेद शिखर जी यात्रा का श्रेय राजा श्री सुप्रभाव सेन को है।

शासन काल में उत्पन्न महापुरुष – 11वां रूद्र महादेव, 22वां कामदेव नाग कुमार, महाराज चेटक, महाराजा सिद्वार्थ, प्रियकारिणी, वरदत्तादि पंच ऋषि, वुषभ सेठ, भद्रा सेठानी, प्रभावती रानी, उद्दामन राजा।

कुल गणधर – 10

गणधर के नाम – 1. स्वयंभू (पृथुकेतु) 2. हलि 3. नतबल 4. नीलंगद 5. महानील 6. पुरुषोष्ठाम 7. भृनान 8. सम्यक्त 9. देवगने 10. ज्ञानगोचर।

विशेष–

- बाईसवें तीर्थंकर के मोक्ष जाने के 83650 वर्षो के बाद इनका जन्म हुआ था।
- बाईसवें तीर्थंकर के केवलज्ञान के 84380 वर्ष 2 मास 4 दिन बाद इनको केवलज्ञान हुआ था।
- बाईसवें तीर्थंकर के मोक्ष जाने के 83750 वर्षो के बाद इनको मोक्ष हुआ था।

संकलन : ब्र. ज्योति दीदी

आयुर्वेदिक दोहे

1. **मुँह में बदबू हो अगर, दालचीनि मुख डाल, बने सुगन्धित मुख, महक दूर होय तत्काल...**
2. **कंचन काया को कभी, पित्त अगर दे कष्ट, घृतकुमारि संग आँवला, करे उसे भी नष्ट...**
3. **बीस मिली रस आँवला, पांच ग्राम मधु संग, सुबह शाम में चाटिये, बढ़े ज्योति सब दंग...**
4. **बीस मिली रस आँवला, हल्दी हो एक ग्राम, सर्दी कफ तकलीफ में, फौरन हो आराम....**
5. **नीबू बेसन जल शहद, मिश्रित लेप लगाय, चेहरा सुन्दर तब बने, बेहतर यही उपाय...**
6. **पीता थोड़ी छाछ जो, भोजन करके रोज, नहीं जरूरत वैद्य की, चेहरे पर हो ओज...**
7. **ठण्ड अगर लग जाय जो नहीं बने कुछ काम, नियमित पी लें गुनगुना, पानी दे आराम...**
8. **कफ से पीड़ित हो अगर, खाँसी बहुत सताय, अजवाइन की भाप लें, कफ तब बाहर आय...**
9. **अजवाइन लें छाछ संग, मात्रा पाँच गिराम, कीट पेट के नष्ट हों, जल्दी हो आराम...**
10. **छाछ हींग सेंधा नमक, दूर करे सब रोग, जीरा उसमें डालकर, पियें सदा यह भोग...**

संकलन : ब्र. आस्था दीदी

अज्ञानता का फल

लेखक – आचार्य विशदसागर जी

रात्रि का अंतिम पहर समाप्त होने को था। मुर्गे ने बांग दी और देखते ही देखते पूर्व दिशा में लालिमा बिखेरता हुआ सूर्य अपना प्रकाश फैला रहा था। पक्षी अपने–अपने भोजन की तलाश में उड़ रहे थे तथा गायें घास चरने वन की ओर जा रही थी। चमकती हुई धूप में सोनू नींद खुलते ही अपनी आंखों को मलता हुआ उठकर बैठ गया और माँ को आवाज दी। माँ ने तुरंत ही अपने लाड़ले बेटे का मुँह धोकर, उसे तैयार करके दूध पिलाया। सोनू प्रसन्नतापूर्वक खेलने लगा। उसे अपने घर में पले गाय के बछड़ा आगे दौड़ने लगता तो सोनू उसे पकड़ने के लिये पीछे दौड़ता हुआ आगे बढ़ गया।

बछड़े को दौड़ता देख सोनू से माँ ने कहा–बेटा! बछड़े के साथ दूर मत जाना, कहीं भटक जायेगा। सोनू ने वहीं से कह दिया– माँ! मैं थोड़ी दूर से लौट आऊँगा, मुझे रास्ता मालूम है। मैं बछड़े के साथ खेल रहा हूँ, मैं नहीं भूलूगा। माँ बार–बार मना करती रही, किन्तु वह नहीं माना और खेलते हुये बहुत दूर निकल गया। सोनू को अपनी समझ पर गर्व था। माँ के कहने पर उसे चिढ़ होती थी कि माँ मुझे खेलने के लिये दूर जाने से रोकती है।

सोनू बछड़े के पीछे–पीछे दौड़ने में मस्त था। उसे पता ही नहीं रहा और वह गांव से निकल कर जंगल की झाड़ियो के बीच पहुँच गया। जब गाय ने रंभाना प्रारंभ किया, तो बछड़ा खूब तेज दौड़ लगा कर झाड़ियो के बीच से निकल कर घर की ओर चला गया, किन्तु सोनू बछड़े को वही खोजता रहा और रास्ता भूल कर आगे जंगल की ओर बढ़ता गया।

जंगल में भालू ने सोनू को देखा। वह बहुत भूखा था। तुरंत ही सोनू पर टूट पड़ा। सोनू को न तो चिल्लाने का अवश्य मिला और न ही भागने का, देखते ही देखते भालू ने सोनू का शरीर क्षत विक्षत कर दिया। तब सोनू को अपनी माँ की याद आई। पर ''अब पछताये होत क्या, जब चिड़ियाँ चुग गई खेत"।

इधर सोनू की माँ ने बछड़े को आया देख सोनू की खोज की, किन्तु सोनू का कहीं पता नहीं चला। माँ ने बार–बार बछड़े को दौड़ाने का प्रयास किया कि शायद बछड़े सोनू के पास पहुँच जावे, किन्तु बछड़ा आगे नहीं बढ़ा। सोनू की माँ खोजते–खोजते थक चुकी, किन्तु सोनू का कहीं पता नहीं चला। वह बहुत दुखी हो रही थी, तथा मन ही अत्यंत क्रोधित भी हो रही थी। उसे कोई राह नहीं सूझ रही थी कि अब क्या करें?

इधर बछड़ा भी जंगल की ओर नहीं जा रहा था। तब सोनू की माँ ने एक लाठी उठाकर बछड़े को खूब जोर–जोर से पीटना प्रारंभ कर दिया और जोर–जोर से रोने भी लगी।

पिटते–पिटते बेचारा बछड़ा रो–रो कर बेहाल हो रहा था और भागने का प्रयास कर रहा था किन्तु नहीं भाग सका और धड़ाम से वहीं पर गिर पड़ा। कुछ ही देर में बछड़े के प्राण पखेरू उड़ गये। उधर बछड़े की माँ गाय मरे बछड़े को देखकर अपनी आंखों से आंसू बहाने लगी और बछड़े को सूघने लगी। किन्तु बेचारा बछड़ा तो सोनू की माँ के हाथों का शिकार हो चुका था और हमेशा के लिए सो गया था।

थोड़े से प्रमाद और क्रोध के कारण एक नहीं दो माँ पुत्र विहीन हो गई। अत: हमें समझदारी के साथ कार्य करना चाहिये।

आत्मावलोकन का कार्य पर्युषण पर्व

– मुनि श्री विशालसागर जी

भारतीय संस्कृति में पर्वो का खास महष्ठव है। उसमें भी पर्युषण पर्व जैन समाज में विशेष स्थान रखता है। यह हमारे बीच त्याग का संदेश लेकर आता है। हमें आत्मावलोकन करने की प्रेरणा देता है। 10 दिन तक मनाया जाने वाला यह शाश्वत धर्म मोक्ष का कारण बन सकता है। यह आत्मा की चिकित्सा करने वाला विश्व की समस्याओं का समाधान करने वाला है। राग, द्वेष, माया, झूठ, पचेन्द्रियों के विषय परिग्रह छोड़ने का प्रभु से नाता जोड़ने का संदेश देता है। यह पर्व 10 दिनों के खजाने का दीपक है :-

1. उत्तम क्षमा :- यानी कि क्रोध का अभाव, आत्मा में बह रही क्रोध की नाली को साफ करने का दिन, जो कुछ हो सो तुम ही हो, जो तुम्हें करना है सो करो, अब में कोई प्रतिकार नहीं करूँगा, ऐसी ही भावना का नाम क्षमा।
2. उत्तम मार्दव :- आधि व्याधि से दूर समाधि की यात्रा करने का दिन है। अब अकड़ने का काम नहीं, मात्र झुकना ही झुकना है। अहंकार को मारकर समर्पित हो जाने का नाम है उत्तम मार्दव।
3. उत्तम आर्जव :- यानी कि मन वचन काय का टेढ़ापन समाप्त कर, एक होकर हमने अपनी आत्मा की भूमि को समतल बनाकर उस पर परमात्मा को शुभ विचारों का अंकुरारोपण कर दिया है। इसमें लगने वाले मधुर फलों का नाम है उत्तम आर्जव।
4. उत्तम शौच :- संतोष धारण करने का दिन जिस व्यक्ति ने अंतरंग से परमात्मा का अभिषेक कर लिया है। धर्म को आत्मा से स्वीकार कर लिया है, तो वह सांसारिक वैभव को एकत्रित नहीं करेगा। आत्मा को सूचित बनाने के लिए पुरुषार्थ का नाम ही है उत्तम शौच।
5. उत्तम सत्य :- जो देखता है, वह कहना नहीं, जो कहता है वह देखता नहीं है। कहने और देखने का अंतर समाप्त कर देने का नाम ही सत्य है, इसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता।
6. उत्तम संयम :- जो जग का यम है, सांसारिक व्याधियों को मारने के लिए यमराज के समान है, वही संयम है। संयम एक कवच है।
7. उत्तम तप :- जो आज तक आत्मा में अपने अस्तित्व को बनाये बैठा है, उसे समाप्त करना, जलाना ही तप है। जो हमें तुम्हें जन्म मरण के दुख प्रदान कर रहा है, उसे तपा कर समाप्त करने का नाम है तप।
8. उत्तम त्याग :- यह जीवन का सौंदर्य है। वस्तु के प्रति आसक्ति का भाव मिलने का नाम है त्याग, जो आज तक संजोकर रखा है, उसको त्यागने का नाम है त्याग।
9. उत्तम आकिंचन :- मैं अकेला हूँ, मेरा कुछ भी नहीं है, बस मैं ही आत्मा हूँ। अंतरंग और बहिरंग परिग्रह का पूर्ण रूपेण त्याग ही आकिंचन है।
10. उत्तम ब्रह्मचर्य :- इसका सम्बन्ध सीधे परमात्मा से है। मैं अकेला हूँ, इस भाव को साकार रूप प्रदान करने वाला है ब्रह्मचर्य बाह्य आत्मा में रमण करने का नाम है ब्रह्मचर्य।

इन्हीं दस धर्मो को अपनाना ही दक्षलक्षण पर्युषण पर्व की सार्थकता है। यह हमें सभी से क्षमा करा कर आत्मा में रमण की शिक्षा देते हैं। बिना क्षमा भाव के आत्मा को पाना, मुक्ति को पाना असम्भव है। भगवान महावीर ने कहा है कि अगर तुम्हारी आत्मा में क्षमा का जन्म हो गया तब तुम अहंकारी नहीं बनोगे, तुम्हारी आत्मा से लोभ पलायन कर जाएगा लोभ के पलायन से सत्य, संयम, तप और त्याग अपने आप आ जाते हैं। इसके बाद व्यक्ति परमात्मा को पाने की ललक लेकर आत्मा में ब्रह्मचर्य लेकर रमण करने लगता है। पर्युषण पर्व आत्मावलोकन का पर्व है। अपनी आत्मा को देखें और समस्त बुराइयों से मुक्त होकर क्षमा से ब्रह्मचर्य तक की यात्रा का शुभारंभ करें।

वह कौन–सा स्थान है?

संकलन – ऐलक विज्ञानसागर जी

1. वह कौन सा स्थान है, जहाँ शान्तिनाथ भगवान के मंदिर को ग्वालेश्वर का मन्दिर कहते है ?

   – ऊन (पावागिरी)

2. वह कौन सा स्थान है, जहाँ युधिष्ठर, भीम, अर्जुन, मुनिराज की धातु की मूर्तियाँ बनी है ?

   – शत्रुंजयतीर्थ

3. वह कौन सा स्थान है, जहाँ आ. श्री विमल सागर जी महाराज (कोंसमा वाले) ने आजीवन अन्न का त्याग किया था ?

   – गिरनारजी

5. वह कौन सा स्थान है, जहाँ चार महीने बाद मृदुमति मुनि आहार के लिए आये थे ?

   – आलोक नगर

6. वह कौन सा स्थान है, जहाँ लक्ष्मण ने कोटि शिला उठाई थी ?

   – सुन्दर पीठ

7. वह कौन सा स्थान है, जिसका नाम रामायण में ''वसुमती'' आया है ?

   – राजगृही

सप्त व्यसन से मुक्ति

व्यसन और भेद

बुरी आदतों से बनी, लत या व्यसन कहाय।
सप्त व्यसन संसार में, जीवन नरक बनाय।।

चोरी

बिन आज्ञा स्वामी, गहे–चोरी तभी कहाय।
चोरी से मिटता सदा, जो कुछ धरा कमाय।।

जुआँ

बिना परिश्रम के किये, हो अर्जन संयोग।
दांव लगा कर जीतना, जुआँ व्यसन का योग।।

शिकार

पर–पीड़न में रुचि करें, करें जीव का घात।
स्वाद और मन मोदते, हो शिकार की बात।।

पर–स्त्री वेश्यागमन

पर–स्त्री वेश्यागमन, महापाप के द्वार।
जूठन खानें में रमे, नर जीवन धिक्कार।।

मांस–मदिरा आहार

खान–पान में भ्रष्ट हो, करते मांसाहार।
मदिरा में मदहोश हो, कैसे हो उद्धार।।

व्यसन–फल–मुक्ति

व्यसनों के संजोग से, बनते महल मसान।
अत: त्याग इनका करें, बनें भव्य इन्सान।।

संकलन – ब्र. सपना दीदी

माँ रद्द हो गई!!!

वाह रे ! जमाने ! तेरी हद हो गई,
बीवी के आगे माँ रद्द हो गई !
बड़ी मेहनत से जिसने पाला,
आज वो मोहताज हो गई !
और कल की छोकरी,
तेरी सरताज हो गई !
बीबी हमदर्द और माँ सरदर्द हो गई !
वाह रे ! जमाने ! तेरी हद हो गई ! !
पेट पर सुलाने वाली,
पैरों में सो रही !
बीबी के लिए लिम्का,
माँ पानी को रो रही !
सुनता नहीं कोई, वो आवाज देते सो गई !
वाह रे ! जमाने ! तेरी हद हो गई ! !
माँ माँजती बर्तन,
वो सजती संवरती है !
अभी निपटी ना बुढ़िया तू,
उस पर बरसती है !
अरे ! दुनिया को आई मौत,
तेरी कहाँ गुम हो गई !
वाह रे ! जमाने ! तेरी हद हो गई.... ! !
अरे ! जिसकी कोख में पला,
अब उसकी छाया बुरी लगती,
बैठ होण्डा पे महबूबा,
कन्धे पर हाथ जो रखती,
वो यादें अतीत की,
वो मोहब्बतें माँ की, सब रद्द हो गई !
वाह रे ! जमाने ! तेरी हद हो गई ! !
बेबस हुई माँ अब,
दिए टुकड़ो पर पलती है,
अतीत को याद कर,
तेरा प्यार पाने को मचलती है !
अरे ! मुसीबत जिसने उठाई,
वो खुद मुसीबत हो गई !
वाह रे ! जमाने ! तेरी हद हो गई.. ! !
माँ तो जन्नत का फूल है,
प्यार करना उसका उसूल है,
दुनिया की मोहब्बत फिजूल है,
माँ की हर दुआ कबूल है,
माँ को नाराज करना इंसान तेरी भूल है,
माँ के कदमो की मिट्टी जन्नत की धूल है।

संकलन – ब्र. ज्योति दीदी

पितृ भक्ति

संकलन – क्षु. श्री विसोमसागर जी

भारत देश का हृदय कहे जाने वाले मध्य प्रदेश राज्य में एक नगर था, जहाँ पर वकील गरीबदास अपने बेटे दीनदयाल के साथ रहते थे। वे वास्तव में गरीबों के दास थे। वकील साहब के घर पर भीड़ ही लगी रहती थी। वकील साहब की फीस पहले जमा करनी पड़ती थी, तभी वह केस की बहस किया करते थे।उनकी प्रसिद्धि चारों ओर फैल रही थी। पुण्य के उदय से उनके तर्कों में भी दम रहती थी। बड़े से बड़े फैसले हमेशा उनके ही पक्ष में जाते थे।कई बार तो न्यायाधीश को भी उनके तर्क के आगे झुकना पड़ता था तथा काफी सोच विचार करना पड़ता था। यदि कोई गरीब व्यक्ति उनके पास अपनी फरियाद लेकर आता था तो बिना फीस लिए यहाँ तक टिकिट और नकल के पैसे भी वह अपनी ओर से चुका दिया करते थे।

कुछ समय बाद उनका बेटा दीनदयाल भी वकालत करने लगा। लोगों का उसके यहाँ पर भी ताँता लगा रहता था। एक दिन एक गरीब व्यक्ति जिसके पुत्र को झूठा ही कत्ल के केस में फँसा दिया गसा था, वह गरीब दीनदयाल के पास पहुँचा और उसने बच्चे की पैरवी करने के लिए निवेदन किया। वकील साहब ने पहले ५०० रुपये फीस के तमा करने को कहा।गरीब ने अपना बटुआ निकालकर देखा तो उसमें मात्र १२० रुपये ही निकले। गरीब ने वह रुपये वकील साहब की टेबिल पर रखे और रोते हुये कहने लगा-मेरे पास मात्र इतने ही रुपये हैं, शेष रुपये मैं अपनी फसल आने पर दे दूँगा।

वकील साहब ने उसे फटकारते हुये उसके रुपये फेंक दिये और कहा-मैंने तुम्हारे जैसे भिखमंगों के लिए वकेलत नहीं पढ़ी। यदि पैरवी कराना है तो पूरे रुपयों का प्रबन्ध करके लाओ।तुम्हारे जैसों से बात करने के लिए मेरे पास समय नहीं है।

किसान ने पैर पकड़कर गिड़गिड़ाते हुये कहा- सरकार! मैं कल गाँव में किसी से उधार माँगकर, कर्ज लेकर आपको रुपसा अवश्य ही दे जाऊँगा, चाहे मुझे अपना खेत ही गिरवी क्यों ना रखना पड़े।वकील साहब मेरी अर्जी सुन लीजिए। मेरे बच्चे को बचा लीजिए। मेरे एक ही लड़का है।उसे फाँसी हो जायेगी तो मैं सन्तान हीन हो जाऊँगा, मेरी जिंदगी का सहारा मुझसे छूटजायेगा, मेरी भरी पूरी जिंदगी लुट जायेगी।

गरीब की बात सुनकर वकील साहब झुंझला उठे और बड़बड़ाते हुये कहने लगे-जहन्नुम में जावे तेरी जिंदगी, तरा बच्चा।पहले रुपयों का इंतजाम करके ला -फिर आगे की चर्चा कर। चला जा यहाँ से।

पीछे वाले कमरे में बैठे पिता गरीबदास जी सब सुन रहे थे। उन्होंने आवाज देकर दीनदयाल को पुकारा। दीनदयाल पिताजी की आवाज सुनकर उनके पास पहुंचे।पिता गरीब दास ने वकील साहब के गाल पर एक जोर का थप्पड़ मारा। अच्छे खासे नवजवान वकील साहब चक्कर खाकर गिर पड़े और उनका गाल लाल हो गया। पिता गरीबदास ने कहा-मैंने तुझे इसलिए पढ़ाया, लिखाया, वकील बनाया कि तू लोगों को कैसे जहन्नुम में भेजेगा। उनका गला दबायेगा। निकल जा इसी वक्त मेरे घर से। तेरे जन्म से लेकर पालन करने तक, जाने के

पहले जो खर्च हुआ इसी वक्त यहाँ रख दे। नहीं तो उस गरीब के लड़के की पैरवी करके उसे बेदाग छुड़ाकर उसके हवाले कर। एक भी पैसा लिया तो मैं अभी घासलेट डालकर तेरी सभी पुस्तकों में आग लगा दूंगा।

वकील दीनदयाल ने हाथ जोड़कर क्षमा माँगते हुये पिता गरीब दास के पैर पकड़ लिए।पिता ने शांत होकर कहा-बेटा! यदि कहीं दुर्भाग्य से तेरा पुत्र इस प्रकार के संकट में पड़ा होता और तेरे पास रुपया नहीं होता और तू किसी वकील के पास जाता तो तुझे कितना दु:ख होता। हमें सभी के साथ वही व्यवहार करना चाहिए जो हमें स्वयं अपने लिए पसंद हो।

वकील दीनदयाल ने पिता के कहे अनुसार चुपचाप उस गरीब व्यक्ति की बातें सुनकर कार्यवाही करना प्रारंभ कर दिया और उसके पुत्र को बरी कराकर यश और दुआ प्राप्त की। किसी गरीब के आने पर वकील साहब को उस समय की घटना तुरंत ही तरो ताजा हो जाती है। और हाथ गाल पर पहुंच जाता है तथा पिता जी के द्वारा दी गई शिक्षा भी याद आ जाती है। धन्य है वह पिता और उनकी सीख।

पानी तेरी अजब कहानी

पानी आकाश से गिरे तो बारिश,
आकाश की ओर उठे तो भाप,
अगर जम कर गिरे तो ओले,
अगर गिर कर जमे तो बर्फ,
फूल पर हो तो ओस,
फूल से निकले तो इत्र,
जमा हो जाए तो झील,
बहने लगे तो नदी,
सीमाओं में रहे तो जीवन,
सीमाएं तोड़ दे तो प्रलय,
आँख से निकले तो आँसू,
शरीर से निकले तो पसीना,
और
जिनेन्द्र देव के चरणों को छू कर निकले तो गंधोदक होता है
अरें! वहीं गंधोदक जो श्रीपाल जैसों का कुष्ट खोता है।

संघस्थ – मोनू भैया

श्री बड़ागाँव पार्श्वनाथ चालीसा

दोहा - परमेष्ठी जिन पाँच का, जपूँ निरन्तर नाम। बड़ागाँव में पार्श्व जिन, के पद करूँ प्रणाम।।

(चौपाई)

जय-जय पार्श्वनाथ शिवकारी, महिमा तुमरी जग में न्यारी। तुम हो तीर्थंकर पदधारी, तीन लोक में मंगलकारी।।
काशी नगरी है मनहारी, सुखी यहाँ की जनता सारी। राजा अश्वसेन कहलाए, रानी वामादेवी गाए।।
जिनके गृह में जन्मे स्वामी, पार्श्वनाथ जिन अन्तर्यामी। देवों ने तब रहस्य रचाया, पाण्डुक वन में न्हवन कराया।।
वन में गये घूमने भाई, तपसी प्रभु को दिया दिखाई। पंचाग्नी तपक रने वाला, अज्ञानी था भोला-भाला।।
तपसी तुम क्यों आग जलाते, हिंसा करके पाप कमाते। नाग युगल जलते हैं कारे, मरने वाले हैं बेचारे।।
तपसी ने ले हाथ कुल्हाड़ी, जलने वाली लकड़ी फाड़ी। सर्प देख तापसी घबराया, प्रभु ने उनको मंत्र सुनाया।।
नाग युगल मृत्यु को पाए, पद्मावती धरणेन्द्र कहाए। तपसी मरकर स्वग सिधाया, संवर पाकर ध्यान लगाए।।
प्रभू बाल ब्रहम्चारी गाए, संयम पाकर ध्यान लगाए। इक दिन कमठ वहाँ पर आया, उसके मन में बैर समाया।।
किए कई उपसर्ग निराले, मन को कम्पित करने वाले। फिर भी ध्यान मग्न थे स्वामी, बनने वाले थे शिवगामी।।
धरणेन्द्र पद्मावती तब आये, प्रभु के पद में शीश झुकाए। पद्मावती ने फण फैलाया, उस पर प्रभु जी को बैठाया।।
धरणेन्द्र ने माया दिखलाई, फण का क्षत्र लगाया भाई। प्रभु ने केवलज्ञान जगाया, समवशरण देवेन्द्र बनाया।।
दिव्य देशना प्रभु सुनाए, भव्यों को शिवमार्ग दिखाए। उत्तर प्रदेश बागपत भाई, बड़ागाँव जिसमें सुखदायी।।
टीला जहाँ रहा मनहारी, महिमा जिसकी अतिशयकारी। लक्ष्मण सेठ यहाँ के वासी, जिनपे पड़ी विपत्ती खासी।।
सेठ को राजा ने बुलवाया, मृत्यु दण्ड का हुक्म सुनाया। तब जल्लाद सामने आये, तोप में गोला जो भरवाए।।
पार्श्व प्रभु को सेठ ने ध्याया, चमत्कार अतिशय। ठण्ड हुआ तोप का गोला, तब प्रभु का जयकारा बोला।।
ऐलक अनन्त कीर्ति जी आए, प्रतिमा की यह बात चलाए। लोग सभी टीला खुदवाए, पार्श्व प्रभु के दर्शन पाए।।
श्वेत वर्ण की प्रतिमा प्यारी, दिखती है अतिशय मनहारी। सन् उन्नीस सौ बाइस भाई, फाल्गुन श्शुक्ल अष्टमी।।
उसी जगह पर कुआँ खुदाया, पानी अमृत जैसा पाया। इस जल की है महिमा न्यारी, रोग-शोक की नाशनहारी।।
एक भक्त ने जल में नहाया, मुक्ती कुष्ट रोग से पाया। फाल्गुन शुक्ल अष्टमी जानो, मेला अतिशय लगता मानो।।
श्रावण शुक्ल सप्तमी भाई, को मेला भरता सुखदायी। आचार्य विशदसागर जी आए, चालीसा यह श्रेष्ठ बनाए।।
दोहा - पाठ करें चालीस दिन, दिन में चालिस बार। बड़ागाँव के पार्श्व का पावें सौख्य अपार।।
सुख शांती सौभाग्य युत, तन हो पूर्ण निरोग। 'विशद' ज्ञान को प्राप्त कर, पावें शिवपद भोग।।

तुलसी के प्रयोग

1. **दाँत दर्द**–तुलसी के पत्ते तथा काली मिर्च को पीसकर गोली बना लें। इस गोली को दर्द वाले दाँत के नीचे दबा लें,तुरन्त लाभ होगा।
2. **घाव**–तुलसी के पत्तों को पीसकर यदि घाव पर बाँध लें तो घाव शीघ्र ठीक हो जाएगा।
3. **दाद**–दाद के स्थान पर तुलसी के पत्ते रगड़ने से दाद अच्छा हो जाता है।
4. **बच्चों का पेट दर्द**–तुलसी और अदरक रस सम भाग लेकर थोड़ा सा गुनगुना करके पिला दें।
5. **सिर दर्द**–तुलसी के पत्तों को रस और नींबू का रस बराबर मात्रा में पीने से सिर दर्द दूर हो जाता है।
6. **हैजे की दवा**–तुलसी के पत्तों को कालीमिर्च के साथ पीसकर गोली बनाकर दें।इससे हैजा दूर होगा।
7. **चेचक**–तुलसी के पत्ते और अजवायन को पीसकर प्रतिदिन लेप करने से लाभ होगा।
8. **कण्ठ रोग**–तुलसी के पत्तों का रस और मिश्री चाटने से कण्ठ का रोग दूर हो जाता है।
9. **सूजन**–शरीर के किसी भाग में सूजन आ जाने पर तुलसी के पत्तों का लेप करने से सूजन दूर हो जाती है।
10. **चक्कर आना**–तुलसी के पत्तों का रस थोड़ी सी चीनी मिलाकर पीने से चक्कर आना दूर होगा।
11. **बच्चों का श्वांस रोग**–तुलसी के पत्तों का रस मिश्री में मिलाकर पीने से बच्चों का श्वांस रोग दूर हो जाता है।

जानिए - साबुन-शेम्पू वाशिंग पावडर का रहस्य

– मार्च-अप्रैल 1991 के संस्करण में एक पाठक का प्रश्न, साबुन के रैपर पर टी.एफ.एम. का प्रतिशत लिखा होता है। इसका क्या मतलब होता है? सम्पादक महोदय ने उत्तर लिखा कि वह टोटल फैटी मेटर का प्रतिशत है। साबुन में कितने प्रतिशत चर्बी डाली गई है, इसका यह मतलब है।

श्रीमति मेनका गांधी जी (केन्द्रीय मंत्री) के लेख कई बार अखबारों में प्रकाशित हुए जिनमें बताया गया है कि जिन साबुनों में ''पशुचर्बी रहित'' नहीं लिखा है तो उन साबुनों में, शेम्पू में, वाशिंग पावडरों में, पशु चर्बी का प्रयोग किया गया है, समझ लेना चाहिए।

उपरोक्त जानकारी के पश्चात् कम्पनियों से जानकारी चाही गई तो मात्र 'चन्द्रिका सोप' ने उत्तर दिया, पशु चर्बी रहित है और उसके रैपर पर लिखा जाने लगा- इस प्रकार बाद में 'मेडीमिक्स, राज व छोकरा सोप' इत्यादी पर भी लिखा जाने लगा- पशु चर्बी रहित। अत: साबुनों का प्रयोग करने से पूर्व अच्छे से जाँच पड़ताल कर लें। कहीं आप मूर्ख न बन जाएँ,चर्बी लगाकर स्वच्छ साफ शुद्ध मानने के भ्रम में।

मुक्तक

माप चाहे सागर से हो या गागर से माप तो है।
जाप चाहे चंदन की हो या मोती की जाप तो है।।
कोई छुपकर करें या खुलकर करें कैसे भी हो।
पाप छोटा हो या बड़ा हो मगर पाप तो है।।